मोरंगे

सितम्बर–अक्टूबर 2016

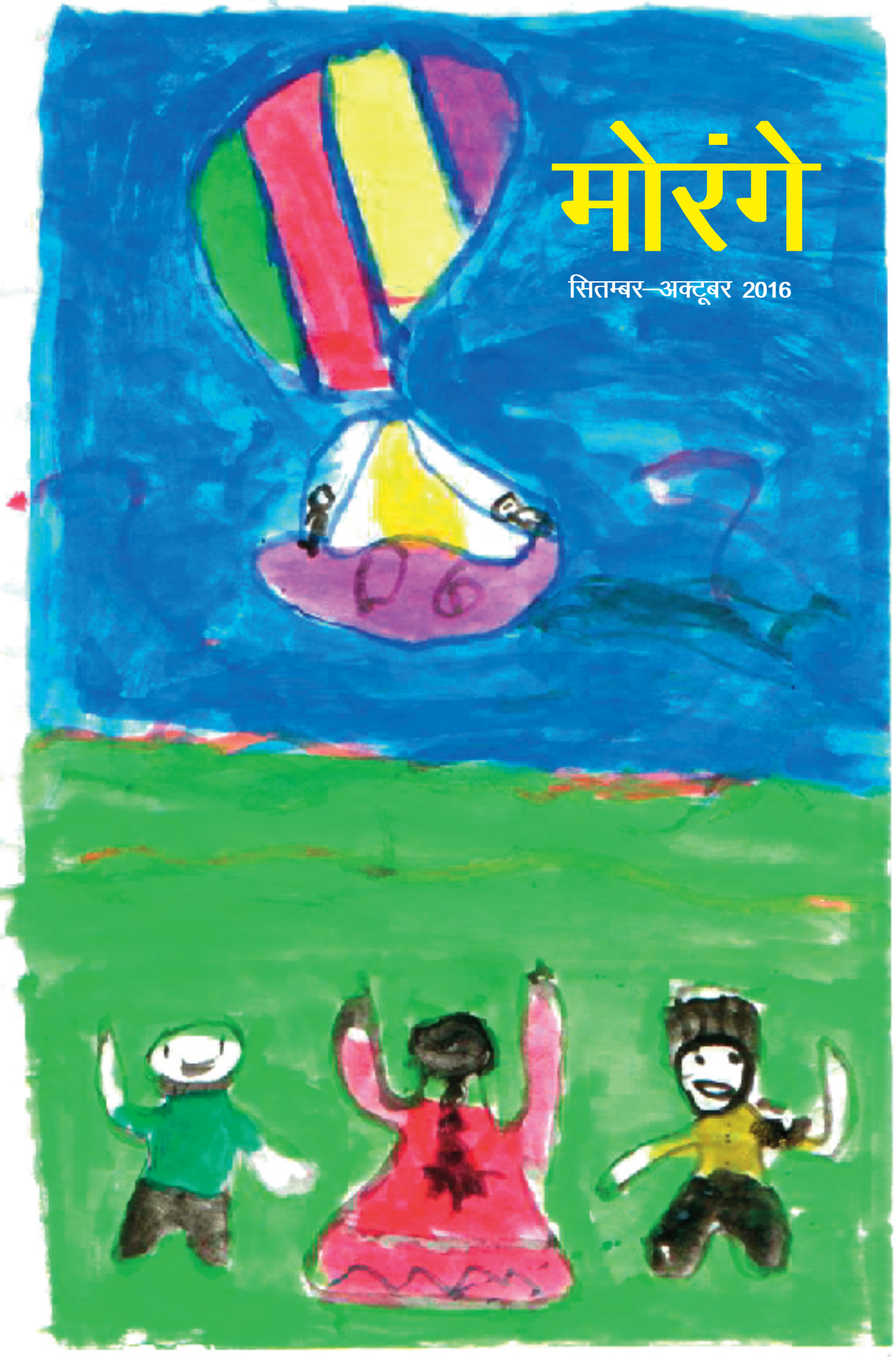

इस बार

खिड़की

3 सुनहरे सपने देखने वाला सुन्दर पक्षी

कविताएँ

8 बसंत / ऑर्डर

9 ढोल

10 तोता / हाथी

11 चकचूंदर

कहानियाँ

12 रबड़ी का घर

13 रानी की चतुराई
चालाक गीदड़

14 केक तो काटा ही नहीं

16 बुढ़ा किसान

17 सुन्दर

याद की धूप–छाँव में

18 भुजिया / करंट

19 टक्कर

कमलेश, उम्र–10 वर्ष, रोशनी

बात लै चीत लै

20 चिड़िया व चुहिया

22 **भाषा की सहेलियाँ ...**

23 **हीहीही–ठीठीठी**

कुछ हमने बढ़ायी

सम्पादन : विष्णु गोपाल मीणा
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जीवनेद्र सिंह
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – पूजा, उम्र–12 वर्ष, समूह–रंगोली
वर्ष 8 अंक 75–76

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–निदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
हॉटल सिटी हार्ट के सामने,
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

सुनहरे सपने देखने वाला सुन्दर पक्षी

किसी समय की बात है, एक सुन्दर नन्हा पक्षी था। उसे अपनी सुन्दरता पर बड़ा नाज था और वह बड़ा घमण्डी हो गया था। उसके पक्षी दोस्त उसके मिथ्याभिमान पर हंसते थे। उन्होंने उससे एक दिन कहा, ''यदि तुम्हारे अन्दर किसी काम को करने की योग्यता नहीं है, तो ऐसी खूबसूरती किस काम की है?'' ''योग्यता नहीं है?'' सुन्दर नन्हा पक्षी उनकी इन बातों से चिढ़कर मन ही मन बोला, ''तो क्या हुआ? मैं जल्दी ही सब कुछ सीख सकता हूँ'' तभी उसे एक उकाब आकाश में उड़ता दिखाई दिया। नन्हे पक्षी ने अपने मन में कहा ''किसी उड़ाकू–वीर की तरह आसमान में सैर करने में कितना मजा आएगा! काश मैं भी उस उकाब की तरह आसमान में उड़ सकता!''

नन्हा पक्षी चिल्लाकर बोला, ''उकाब चाचा क्या आप मुझे उड़ना सिखा सकते हैं? मै भी आपकी तरह आकाश की बुलंदियों में उड़ना चाहता हूँ।'' लेकिन उकाब इतनी ऊँचाई पर उड़ रहा था कि उसे नन्हे पक्षी की आवाज बिल्कुल सुनाई नहीं दी। अब वह क्या करे? अचानक उसे एक तरकीब सूझी। वह उड़ते हुए उकाब की प्रत्येक क्रिया को ध्यान से देखने लगा और उसकी नकल करने लगा। नन्हें पक्षी ने अपनी टांगें मोड़ ली और उकड़ूँ बैठकर अपने पंख फैला दिए। उसने अपनी आंखें भी बंद कर ली। उसने सोचा उसे इतनी उँचाई से नीचे नहीं देखना चाहिये, वरना चक्कर आ जाएगा। इसके बाद वह कल्पना करने लगा कि वह उकाब की तरह आकाश में बहुत उँचाई पर उड़ रहा है और उसके तमाम दोस्त उसके इस साहसिक कार्य की प्रशंसा कर रहे हैं। अपनी कल्पना में उसने अपने कुछ दोस्तों को वाह–वाह

करते हुए भी सुना। ..

कितना घमंडी था वह! वह इस हर्षप्रद दृश्य को देखने की इच्छा को दबा नही सका और उसने धीरे से अपनी आंखें खोल दी। अरे, वह तो अभी पेड़ पर ही बैठा हुआ है, वहाँ से हिला तक नहीं। नन्हा पक्षी कुछ हताश हो गया। तभी उसे जंगली हंसों का एक जोड़ा ऊपर उड़ता दिखाई दिया और उसके मन की आशा पुनः जाग

अशोक, 8 वर्ष, समूह–सागर

उठी। उसने सोचा क्यों न इन हंसों से कहूँ कि वे मुझे उड़ना सिखाए। जब जंगली हंस आराम करने के लिए आकाश से नीचे आ गए, तो वह जल्दी से उनके पास गया और विनती करने लगा, ''हंस चाचा, कृपया मुझे उड़ना सिखाएं! उकाब चाचा और आपकी तरह मैं भी आसमान का उड़ाकू–वीर बनना चाहता हूँ।'' जंगली हंस खुशी से तैयार हो गया। जंगली हंस ने नन्हे पक्षी को धीरज से उड़ना सिखाना शुरू किया, ''अपने पंख पूरी तरह फैला लो और फिर उन्हें जोर से उपर नीचे करो!'' जंगली हंस बहुत ही धैर्यवान शिक्षक था। नन्हा पक्षी बड़े उत्साह से उड़ना सीखने लगा। पहले दिन के अभ्यास के बाद वह थोड़ा–थोड़ा उड़ने लगा। जंगली हंस ने उसे प्रोत्साहित करते हुए कहा, ''जमीन से थोड़ा ऊपर उठ जाना ही काफी नहीं है। अच्छी तरह उड़ने के लिए तुम्हें कठिन से कठिन परिस्थिति में भी उड़ने का अभ्यास करना चाहिए।'' दो दिन बीत गए। नन्हा पक्षी उड़ने तो लगा था, लेकिन बहुत ऊँचा नहीं। उसने चिंतित होकर कहा, ''हंस चाचा, मेरे पंख इतने छोटे हैं कि मैं ज्यादा ऊँचा नहीं उड़ पाता।'' जंगली हंस ने उत्तर दिया, ''पंख छोटे हैं तो क्या हुआ? तुम हलके भी तो हो। अच्छी तरह अभ्यास करते रहो, जरूर ऊँचा उड़ सकोगे।'' तीसरे दिन नन्हा पक्षी बहुत उदास दिखाई दे रहा था। ज्यादा ऊँचाई पर

उड़ना उसके बस की बात नहीं, यह सोचकर वह अपने अभ्यास को छोड़ने को तैयार हो गया। इसलिए जब जंगली हंस बड़े उत्साह से उसे उड़ना सिखाने के लिए आया, तो वह पेड़ों की पत्तियों में जाकर छिप गया तथा उसने निश्चय कर लिया कि वह और अधिक उड़ना नहीं सीखेगा।

एक दिन उसने मदारिन बतखों के एक जोड़े को तालाब में तैरते देखा। मन ही मन उनकी सराहना करते हुए वह सोचने लगा, कितना अच्छा हो यदि मैं भी तैरना सीख लूं और पानी का तैराक–वीर बन जाऊँ। वह उड़कर कुमुदनी के पत्ते पर जा बैठा और कहने लगा, ''दीदी! कृपया मुझे तैरना सिखाओ! मैं एक दक्ष तैराक बनना चाहता हूं।'' मदारिन बतखों ने उत्तर दिया, ''ठीक है। अगर तुमने सीखने का पक्का इरादा कर लिया है, तो हम अवश्य तुम्हें तैरना सिखाएंगी।'' नन्हे पक्षी ने तैरना सीखना शुरू कर दिया। लेकिन पानी में वह केवल दो चार बार ही अपने पैर चलाकर थोड़ा सा आगे गया होगा कि डुबकी खा गया और उसके मुँह व पेट में पानी चला गया। वह व्याकुल होकर चिल्ला पड़ा। मदारिन बतखों ने उसे सान्त्वना दी, ''डरो मत! तैरना सीखते समय थोड़ा सा पानी तो पेट में चला ही जाता है।'' अगले दिन फिर नन्हे पक्षी के पेट में पानी चला गया। इससे परेशान होकर उसने सोचा कि वह अब और तैरना नहीं सीखेगा। उसका हौसला बढाने के लिए मदारिन बतखों ने उसे बहुत समझाया, फिर भी उसने उनकी एक न सुनी और पंख फड़फड़ता हुआ पानी से निकलकर तालाब के किनारे जा पहुँचा। तभी वे जंगली हंस उसको ढूंढते हुए वहां आ पहुँचे और बोले, ''ऐ सुन्दर नन्हें पक्षी! इतने दिन तुम कहाँ रहे? हम हर जगह तुम्हारी तलाश करते रहे। क्या अब तुम उड़ना सीखकर आसमान का उड़ाकू –वीर बनना नहीं चाहते?'' ''नहीं! उड़ने में बिलकुल मजा नहीं आता।'' उसने अपने सिर को झटका देते हुए कहा और वहाँ से चला गया।

नन्हा पक्षी जंगल में गया, जहाँ उसने एक भरतपक्षी को गाते हुए सुना। उसका गाना इतना मधुर था कि वह उस पर मोहित हो गया। उसके मन में भरतपक्षी से गाना सीखने की इच्छा जाग उठी। उसने सोचा कि उड़ना सीखने का काम तो बहुत थकाने वाला है और तैरना सीखते समय ढ़ेर सारा पानी निगलना पड़ता है। गाना सीखना जरूर आसान होगा। गवैया बनना भी कोई बुरा काम नहीं है। नन्हें पक्षी, ने भरतपक्षी से पूछा, ''भइया! क्या तुम मुझे गाना सिखाओगे? मैं एक गवैया बनना चाहता हूँ।'' भरतपक्षी ने बड़े उत्साह से उत्तर दिया, ''अवश्य, लेकिन तुम्हें संगीत के सरगम का प्रतिदिन अभ्यास करना होगा और सुबह जल्दी उठकर मेरे पास आना होगा।'' अगले दिन से, नन्हें पक्षी ने भोर के समय संगीत का अभ्यास करना प्रारंभ कर दिया। भरतपक्षी भी उसके साथ–साथ संगीत के स्वरों को बार–बार दोहराता।

शुरू–शुरू में नन्हे पक्षी को संगीत सीखने का बड़ा जोश था, इसलिए उसने बड़ी लगन के साथ उसका अभ्यास किया। लेकिन अगले दिन कुछ ही देर अभ्यास करने के बाद, नन्हें पक्षी का मन ऊब गया और वह भरतपक्षी से बोला, ''मुझे जल्दी से गाना सिखा दो। मुझे सरगम का अभ्यास करते रहना पसन्द नहीं।'' भरतपक्षी ने बड़े धीरज से उसे समझाया, ''पहले सरगम का अभ्यास करो, तभी तुम अच्छी तरह गाना गा सकते हो।'' तीसरे दिन नन्हें पक्षी की कमजोरी पुनः जाहिर हो गई। वह सुबह–सुबह देर तक सोता रहा। सुबह–सुबह उठकर अभ्यास करने का उसका कोई

यक्ष,
उम्र–11 वर्ष
खेजड़ी

इरादा नहीं था। भरतपक्षी उसे बुलाने गया, लेकिन उसने बड़ी अधीरता से जवाब दिया, ''रोज–रोज इतने सवेरे उठना मेरे बस का नहीं है। भइया, तुम्हे बहुत–बहुत धन्यवाद! लेकिन अब मैं संगीत की और शिक्षा लेना नहीं चाहता।'' भरतपक्षी निराश होकर वहाँ से चला गया।

एक दिन नन्हे पक्षी को कहीं निकट से ''दु,दु,दु'' की आवाज आती सुनाई दी। वह उसी तरफ चल दिया जिधर से आवाज आ रही थी। थोड़ी दूर जाने के बाद उसने देखा कि एक कठफोड़वा बीमार पेड़ का इलाज कर रहा है। ''कठफोड़वा दादा एक प्रसिद्व डॉक्टर है,।'' उसने मन ही मन कहा। ''यह सचमुच एक बहुत ही अच्छा पेशा है।'' नन्हें पक्षी ने कठफोड़वे से अनुरोध किया, ''कठफोड़वा दादा, क्या आप मुझे बीमार पेड़ों का इलाज करना सिखाएंगे? मैं वादा करता हूँ बड़ी मेहनत से सीखूंगा।'' कठफोड़वे ने खुशी से उत्तर दिया, ''अवश्य! लेकिन तुम कीड़ों से तो नहीं डरते?'' नन्हे पक्षी ने आश्चर्य से कहा, ''कीड़े! मैं... मैं किसी चीज से नहीं डरता।'' यह सुनकर कठफोड़वा बोला, ''यदि तुम पेड़ों के डाक्टर बनना चाहते हो,

तो तुम्हें उन कीड़ों से नहीं डरना चाहिए जो पेड़ों को नुकसान पहुँचाते हैं। तुम्हे उनका बहादुरी से सफाया कर देना चाहिए।'' नन्हें पक्षी ने सिर हिला कर सहमति प्रकट की। कठफोड़वे ने नन्हें पक्षी को कीड़े पकड़ना सिखाना शुरू कर दिया। लेकिन तभी उसकी नजर एक इल्ली पर पड़ी और वह डर से चीख पड़ा। इस प्रकार नन्हे पक्षी का डॉक्टर बनने का सपना भी अधूरा रह गया।

उसके बाद से सुन्दर नन्हें पक्षी की किसी भी काम को सीखने में कोई रूचि नहीं रह गई और वह अपना सारा समय आवारागर्दी में नष्ट करने लगा। वह यह सोचकर अपने मन को सांत्वना देता कि अपने खूबसूरत पंखों के सहारे बिना किसी हुनर या योग्यता के अच्छी तरह जीवन व्यतीत कर सकता है। ''मैं क्यों बेकार में मुसीबत मोल लूं?'' वह अपने आप से कहता। धीरे–धीरे मौसम ठण्डा होने लगा और पेड़ों की पत्तियां पीली पड़ती गई। उसके सभी पक्षी मित्र आने वाली सर्दियों के लिए घोंसला बनाने और खाना इकट्ठा करने में व्यस्त हो गए। केवला नन्हा पक्षी कोई काम नहीं करता था। प्रत्येक पक्षी उसे सलाह देता कि वह भी सर्दियाँ बिताने की तैयारी कर ले, लेकिन वह आंखें बंद करके अपना सिर हिला देता और उनकी बात पर ध्यान न देता। कुछ दिनों बाद उत्तर से आने वाली ठण्डी हवाएँ चलने लगी और हिमपात के कारण सारी भूमि बर्फ से ढक गई। सभी लोग सर्दियाँ बिताने के लिए अपने–अपने घर के अन्दर चले गये, लेकिन वह नन्हा सुन्दर पक्षी जमे हुए बर्फीले खेतों में बाहर रह गया। सुन्दर नन्हा पक्षी अब किस मुँह से अपने दोस्तों से सहायता का अनुरोध कर सकता था? उसने न तो कोई काम सीखा था और न खाने के लिए पर्याप्त भोजन ही इकट्ठा किया। वह ठण्ड और भूख से व्याकुल हो उठा, लेकिन सूखी घास के किसी ढेर में अपना सिर छिपाने के अलावा उसके सामने और कोई चारा भी नहीं था। जब उसके दोस्तों को उसकी हालत का पता चला, तो उन्हें बड़ा तरस आया। वे सुन्दर नन्हे पक्षी को ठण्ड से ठिठुर कर मरते नहीं देख सकते थे। इसलिए उन्होने बड़ी सहृदयता से घोसला बनाने में उसकी मदद की और उसे भोजन दिया। उन्होंने उसे यह भी समझाया कि उसे किसी भी काम को लगन से न करने की अपनी कमजोरी को दूर करना चाहिए।

उनके इस आचरण का सुन्दर नन्हें पक्षी के दिल पर गहरा असर पड़ा। उसे अपनी कमजोरी पर बड़ा पछतावा हुआ और वह अपने पक्षी दोस्तों से खेद पूर्वक बोला, ''अब से मैं तुम सबसे बड़ी विनम्रता के साथ नए–नए हुनर सीखूंगा। तुम लोग मेरी करनी की जांच करो!'' सबने अपने पंख फड़फड़ाकर उसकी प्रगति का स्वागत किया।

स्रोत– अरविन्द गुप्ता बुक्स

बसंत

दिन सुहाना आया है।
मौसम बसंत का लाया है।।
रंग–बिरंगे फूल खिले हैं।
पानी में छम–छम नाचे हम।
मोर बोले मीठी वाणी।
हवा चले बड़ी मस्तानी।
दिन सुहाना आया है।
मौसम बसंत का लाया है।
खेतों में सरसों लहराये।
कोयल गीत सुहाने गाये।
बागों में झूलों का मौसम।
बसंत करे फूलों की बारिश।
दिन सुहाना आया है।
मौसम बसंत का लाया है।।

रजनी मीना, कक्षा–8,
रा.उ.प्रा.वि. जमूलखेड़ा

ऑर्डर

राजा नहीं बजाता बाजा।
मंत्री को पढ़ाता राजा।
राजा की होती है रानी।
मंत्री डरते हैं राजा से।
मंत्री काम आते राजा के।
मंत्री लड़ते हैं सेना में।
लगता डर सबको सेना से।
राजा ऑर्डर देता है।
मंत्री काम करते हैं।

गोलू गुर्जर,
उम्र–11 वर्ष, समूह–फूल

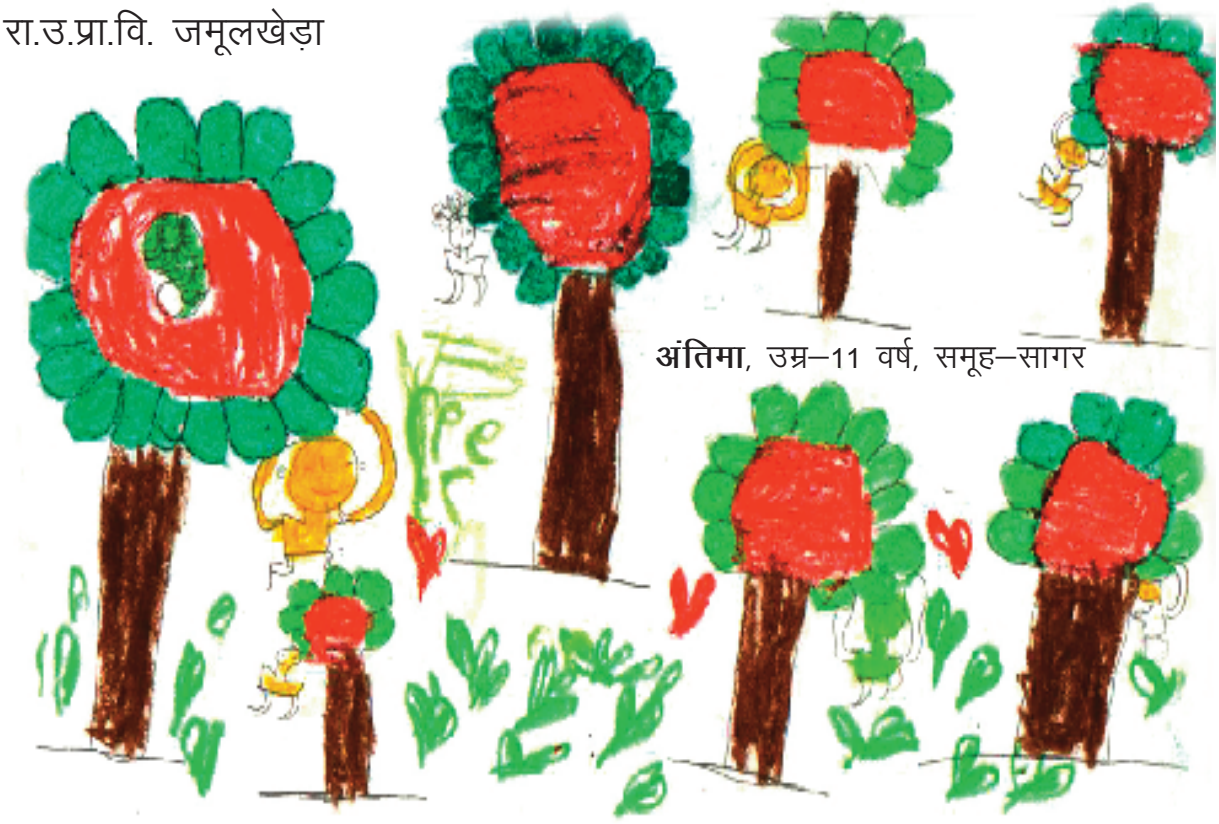

अंतिमा, उम्र–11 वर्ष, समूह–सागर

विजेन्द्र सैनी,
मोहित सैनी
समूह–सागर

ढोल

ढोल हूँ भई ढोल हूँ।
बच्चे मुझे बजाते हैं।
सबको प्यारा लगता हूँ।
पैसों में मैं आता हूँ।
बच्चे मुझे लाते हैं।
सबके घर में बजता हूँ।
सबको नचाता हूँ।
शादी, उत्सव या त्यौहार।
बिना ढोल के सब बेकार।

शिवराज, उम्र–8 वर्ष,
समूह–सागर

तोता

तोता रे तोता
आसमान में उड़ता
शाम पड़ते सो जाता
सुबह उठते ही उड़ जाता
सारी दुनिया को जगाता
कोई–कोई की रोटी खाता।
कोई–कोई की मिर्ची खाता।
नहीं मिले तो चौराहे पर दाना चुगता।

अनीश गुर्जर,
समूह–सागर, उम्र–8 वर्ष

हाथी

केला तोड़ के खाता हाथी।
जंगल में छिप जाता हाथी।
छुपके से निकल कर आता हाथी।
सारा पानी पी जाता हाथी।
बच्चों को नहलाता हाथी।
फूल तोड़ कर लाता हाथी।
लम्बी राग बिठाता हाथी।
सुंदर गाना सुनाता हाथी।
बाजार में नाच दिखाता हाथी।
सब बच्चों को टोपी दिखाता हाथी।

नवरत्न कुमार, समूह–खुशबू, उम्र–9 वर्ष

जियालाल, 11 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

आरती,
11 वर्ष,
समूह–उजाला

चकचूंदर

एक डाल पर बैठा बंदर।
नीचे था एक चकचुंदर।
चकचुंदर ने पूँछ दिखाई।
बंदर जी ने आँख मिचकाई।
चकचुंदर जी गये बाजार।
वहाँ से लाए गोभी–अनार।
बंदर जी खा गए अनार।
बोला चकचुंदर कर दिया बेकार।
चकचुंदर बोला कर ले कुश्ती।
बंदर बोला हारेगा अभी।

पुष्पेन्द्र, सोनू, समूह–उजाला, उम्र–11 वर्ष

रबड़ी का घर

नीरू, उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

एक लड़का था। उसका नाम सोनी था। उसका घर मीठी रबड़ी से बना हुआ था। एक दिन सोनी के घर में एक कुत्ता घुस गया और उसके घर को खाने लगा। घर को खाते देख सोनी को चक्कर आने लगे। उसी समय वहाँ एक हाथी आया। हाथी ने सोनी को अपनी सूंढ से पकड़ लिया और गिरने नहीं दिया। फिर सोनी को होश आया तो उसने हाथी को धन्यवाद दिया। तब तक कुत्ता सारा घर खाकर वहाँ से चला गया। हाथी और सोनी कुत्ते को ढूंढने निकल पड़े। कुत्ता उन्हें नहीं मिला तो वे दोनों परेशान होकर वापस लौट आए। सोनी ने सोचा की अब घर किस चीज का बनाया जाए। अबकी बार उसने मिट्टी से घर बना दिया और गुड़ से लेप कर दिया। एक दिन वही कुत्ता वहाँ पर आया और गुड़ का घर देखकर बहुत खुश हुआ। वह कुत्ता जैसे ही गुड़ के घर के पास गया तो हवा का एक झौंका आया। हवा के झौंके के कारण कुत्ता गुड़ की दीवार पर जा गिरा और उससे चिपक गया। उसने छूटने का बहुत प्रयास किया लेकिन नहीं छूट सका। थोड़ी देर बाद वहाँ सोनी और हाथी आया तो उन्होंने कुत्ते की जोरदार पिटाई की। कुत्ता चिल्लाने लगा, ''मुझे बचा लो, मुझे बचा लो।'' हाथी और सोनी को उस पर दया आ गई तो उसे छोड़ दिया। हाथी ने कुत्ते से पूछा, ''पहले बताओ रबड़ी के घर को तुमने ही खाया था?'' कुत्ते ने कहा, ''मैंने नहीं खाया।'' सोनी ने कहा कि हम भी एक कुत्ते को ढूंढ रहे हैं जिसने मेरे रबड़ी से बना घर खाया था। कुत्ता बोला, ''पहले मेरा भी एक रोटी का घर था। परन्तु उसे भी एक कुत्ता खा गया, मैं भी उसी कुत्ते को ढूंढ रहा था।'' फिर कुत्ता वहाँ से चला गया और कहने लगा कि तुम्हारा रबड़ी का घर मैंने ही खाया था। हाथी और सोनी उस कुत्ते के पीछे भागे परन्तु कुत्ता उनकी पकड़ में नहीं आया। भागते–भागते कुत्ते ने कहा, ''तुम खाने की चीजों से घर क्यों बनाते हो? जिसे देखकर रहने की बजाय खाने का मन करता है।'' पर मैने भी अब तयः कर लिया, ''मैं किसी के बनाये घर को नहीं मिटाऊंगा।''

सलोनी मीना, समूह–झरना, उम्र–7 वर्ष

रानी की चतुराई

एक बार एक राजा था। उसके दस पत्नी थी। एक का नाम राधा, दूसरी का नाम सपना, तीसरी का नाम अंकिता, चौथी का नाम कविता, पाँचवी का नाम ललिता, छठी का नाम मीना, सातवीं का नाम सुनिता, आठवीं का नाम रानी, नवीं का नाम बीना, दसवीं का नाम द्रोपदी था। एक दिन वे सभी जंगल में घूमने गई। रास्ते में एक पेड़ पर एक राक्षस बैठा था। उसे बहुत जोर की भूख लगी हुई थी। उसने सपना को पकड़ लिया और पेड़ के ऊपर बैठ गया। फिर सपना जोर से चिल्लाई, ''मुझे बचाओ–मुझे बचाओ।'' उसकी आवाज रानी ने सुन ली और रानी इधर–उधर झांकने लगी उसे एक पेड़ के ऊपर सपना दिखाई दी। रानी ने राजा की सभी पत्नियों को आवाज देकर बुलाया और राक्षस से सपना को छुड़ाने के लिए कहा। एक बार तो सब की सब राक्षस को देखकर डर गई। पर रानी के कहने पर वे सब मिलकर राक्षस के पत्थर मारने लगी। एक साथ पड़ने वाले पत्थरों से राक्षस खुद को बचा नहीं पाया और डरकर वहाँ से भाग गया। सपना पेड़ से नीचे उतर गई और वे सब खुशी–खुशी घर लौट आई।

राजनी प्रजापत, उम्र–10 वर्ष, समूह–फूलवाड़ी

चालाक गीदड़

एक बार एक गीदड़ को बहुत तेज प्यास लगी थी। वह पानी की तलाश में इधर–उधर घूमने लगा। थोड़ी देर में उसे एक पुराना कुँआ दिखाई दिया। वह दौड़कर कुँए के पास पहुँचा। कुँआ पुराना व टूटा–फूटा था। ज्यादा गहरा भी नहीं था। गीदड़ कुए में कूद गया, जमकर पानी पिया और खूब नहाया। गर्मी के दिन थे। वह फिर कुँए से बाहर आना चाहता था। उसने छलांग लगाई किन्तु असफल रहा। थोड़ी देर में एक बकरा कुँए पर पानी पीने आया। उसने गीदड़ को देखकर पूछा, ''गीदड़ भाई, कुँए का पानी कैसा है, तुम्हें कुँए में कैसा लग रहा है?'' गीदड़ ने कहा यहाँ तो बहुत ठंडक है, यह पानी बहुत मीठा एवं ठण्डा भी है। मुझे बहुत मजा आ रहा है।'' बकरे ने सोचा इतनी जोर की गर्मी है क्यों न मैं भी इस ठण्डे पानी का मजा ले लूँ। वह भी कुँए में कूद गया। गीदड़ चालाक था। बकरे के कूदते ही वह उसकी पीठ पर से छलांग लगाकर कुँए से बाहर आ गया। गीदड़ ने बकरे के मालिक को सूचना दी की तुम्हारा बकरा कुँए में गिर गया है, उसे निकाल लेना।

नरेन्द्र गुर्जर, कक्षा–3, रा.प्रा.वि. बोदल

केक तो काटा ही नहीं

दीपिका, उम्र–11 वर्ष, खेजड़ी

बावड़ी नाम के गाँव में एक छोटा सा परिवार रहता था। उस परिवार में दो जुड़वाँ बच्चे थे। उनका नाम बबलू और ऊमा था। उनके माता–पिता उनको पढ़ाना चाहते थे। पर गाँव में तो कोई पढ़ाता नहीं था। इस लिए उनके माता–पिता ने उनको पढ़ने के लिए कस्बे के स्कूल में दाखिला करवा दिया। बच्चे रोज पास के कस्बे में पढ़ने के लिए जाते। एक दिन एक बच्चा कक्षा में मीठी गोली की थैली लेकर आया। बच्चा सबको एक–एक गोली बांटता और लेने वाले बच्चे उसे बधाई देते। मैड़म ने भी उसे बधाई दी। जब वह बच्चा बबलू और ऊमा के पास आया तो उसने उन्हें भी मीठी गोली दी। उन्होंने उससे पूछा आज तुम सबको मीठी गोली क्यों बांट रहे हो? लड़के ने कहा, ''आज मेरा जन्मदिन है। इस लिए सबको मिठाई खिला रहा हूँ।'' छुट्टी के बाद बबलू और ऊमा घर आ गये।

घर आकर उन्होने अपनी मम्मी से पूछा, ''जन्मदिन क्या होता है?'' उनकी माँ ने कहा, ''जिस दिन हम पैदा होते हैं उस दिन को जन्मदिन कहते हैं।'' बबलू ने कहा, ''पर तुमने तो कभी हमारा जन्मदिन नहीं मनाया?'' मम्मी ने कहा, ''मनाया था बेटा जब तुम पैदा हुए थे तो पूरे घर को सजाया था और पूरे गाँव के लोगों को खाना खिलाया था।'' ऊमा ने फिर पूछा, ''तो दुबारा क्यों नहीं मनाते?'' माँ ने कहा, ''बेटा बार बार नही मनाते एक ही बार मनाते हैं, बहुत खर्चा भी तो होता है?'' पर

बबलू और ऊमा ने जिद पकड़ ली कि हमारा जन्मदिन मनाओं, हमारी स्कूल में तो बच्चे मनाते ही रहते हैं। बच्चों का मन रखने के लिए मम्मी ने कह दिया, ''ठीक है जब तुम्हारा जन्मदिन आयेगा तो मना लेंगे।'' अब तो बच्चे अपने जन्मदिन का इन्तजार करने लगे।

आखिर वह दिन आ ही गया। बबलू और ऊमा को नए कपड़े पहनाए गये। मामा को खाने पर बुलाया गया। रसोई में खीर, पूरी, आलू की सब्जी, पुआ और पकोड़ी

सुमन, उम्र–8 वर्ष, समूह–सितारे

बनने लगी। बबलू और ऊमा ने स्कूल की छुट्टी कर दी। उनकी बुआ ने उनको तिलक लगाया, हाथ में रोली मौली का धागा बांधा और लम्बी उम्र का आशीर्वाद दिया। देवताओं को भोग लगाया गया फिर सबने खाना खाया और सो गये।

जब बबलू और ऊमा स्कूल गये तो उनकी मम्मी ने दोस्तों के लिए पूआ पकोड़ी रख दिए। स्कूल में जाकर सब को बांटे और बताया कि कल हमारा जन्मदिन था। बच्चों ने कहा, ''तुमको टॉफी लेकर आनी थी। बबलू और ऊमा ने जवाब दिया, ''पर हमने तो इन्ही चीजों से जन्मदिन मनाया था। जो हमने खाया वही तुम्हारे लिए भी यही ले आये।''

इस पर मैडम ने पूछा, तो क्या तुमने केक नहीं काटा? बबलू और ऊमा की समझ में कुछ नहीं आया। फिर मैडम ने केक की कहानी बताई। बबलू और ऊमा ने मैडम की बात घर आकर मम्मी को बताई। मम्मी बोली, ''पर बेटा अपने तो जन्मदिन ऐसे ही मनता है। जब हमारी भैंस ब्याती है और देवताओं का जन्मदिन मनाते हैं तब भी ऐसे ही मनाते हैं। ये केक क्या चीज होती है और इसे काटते क्यों हैं?''

विष्णु

बूढ़ा किसान

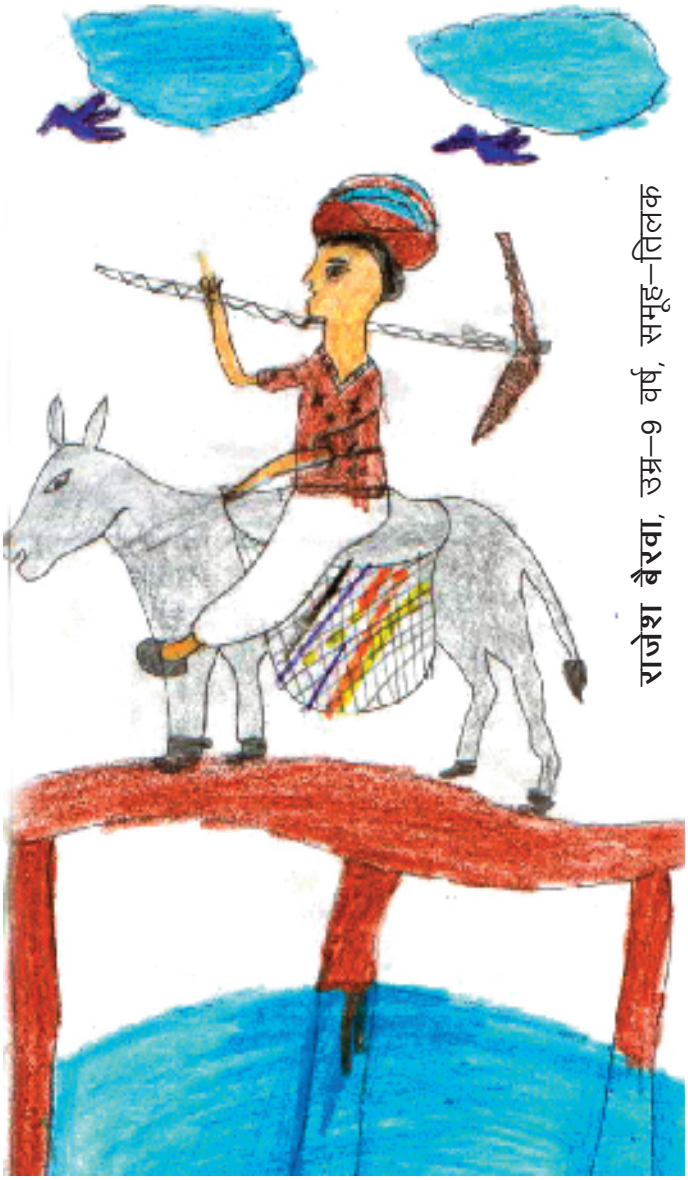

राजेश बैरवा, उम्र–9 वर्ष, समूह–तिलक

एक बार एक किसान था। वह बहुत गरीब और बूढ़ा था। एक दिन उसने पहाड़ पर जाने की सोची। उसने सोचा वह पहाड़ पर जाकर लकड़ियाँ लेकर आयेगा। वह पहाड़ की ओर चल दिया। उससे पहाड़ पर चढ़ा नहीं जा रहा था। वह थक कर परेशान हो गया। उसने देखा कि वहाँ से एक राजा का रथ निकल रहा है। राजा जंगल में घूमने आया था। उस किसान ने राजा से कहा, ''महाराज मुझे पहाड़ पर से लकड़ियाँ लानी है, आप मुझे वहाँ तक छोड़ देना।'' राजा ने उसे रथ में बैठा लिया। किसान पहाड़ पर पहुँच गया और लकड़ियाँ इकट्ठा करने लगा। उसने अचानक भालू की आवाज सुनी तो वह डर गया। किसान पेड़ पर चढ गया। भालू वहाँ से पेड़ के नीचे से निकल गया तो किसान की जान में जान आई। वह नीचे उतरने लगा तो उसे अन्य जानवरों की आवाजें सुनाई देने लगी। किसान डर के मारे वापस पेड़ पर चढ गया। सारे जानवर उस पेड़ के नीचे आ गये और योजना बनाने लगे। उन जानवरों में से खरगोश को पता चल गया कि इस पेड़ के ऊपर एक आदमी बैठा हुआ है। शाम होते ही सारे जानवर वहाँ से चले गये लेकिन खरगोश नहीं गया। किसान अभी भी डरा हुआ था। उसने सोचा कि यदि इस खरगोश ने मुझे देख लिया तो यह बाकी सभी जानवरों को वापस बुला सकता है। सभी जानवरों के जाने के बाद खरगोश किसान से बोला, ''डरो मत, मैं तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ूंगा।'' किसान नीचे उतर आया। फिर किसान और खरगोश दोनों दोस्त बन गये।

धर्मसिंह मीना, समूह–खुशबू, उम्र–10 वर्ष

सुन्दर

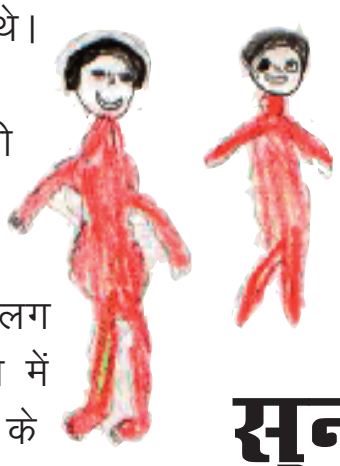

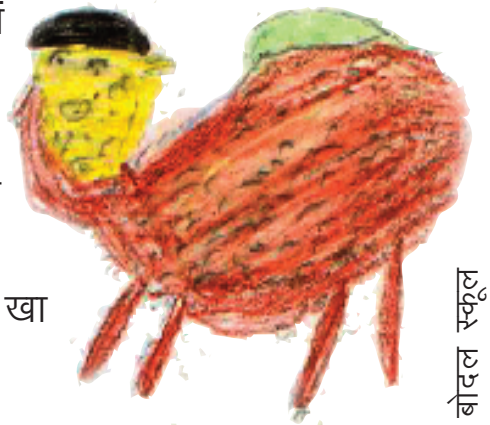

मेवा रेबारी, कक्षा–5, बोदल स्कूल

एक बार एक कौआ और तोता दोनों दोस्त थे। तोता कौए का मजाक उड़ाता और कहता, ''कौआ तुम तो बहुत काले हो और सुंदर भी नहीं हो।'' पर कौआ इसका बुरा नहीं मानता सोचता कि मैं तो काला ही हूँ, तोता सही कहता है। कौआ फिर उसके साथ खेलने लग जाता। एक दिन कौआ और तोता दोनों गाँव में घूमने गये तो कौवे को एक आदमी के घर के सामने कीड़े–मकौड़े मिल गये। कौवे ने तोते से कहा कि तुम भी खा लो। तोते ने कहा कि मैं गंदी चीजें नहीं खाता मैं तो बढ़िया–बढ़िया चीज खाता हूँ। तोते को आम का पेड़ दिखाई दिया तो वह झट से उड़ कर आम के पेड़ पर चला गया और आम खाने लगा।

पेड़ का मालिक तोते से बोला, ''तुम आम क्यों खा रहे हो?''

तोते ने कहा, देखो कौआ तो उस घर के सामने कीड़े–मकौड़े खा रहा है। तुम उसे क्यों नहीं उड़ा रहे हो।''

आदमी बोला, ''वह तो कीड़े–मकौड़े खा रहा है, तुम तो आम खा रहे हो।''

तोता बोला, ''वह तो इतना काला है और मैं तो इतना सुंदर हूँ।''

आदमी बोला, ''वो तो घर के सामने की सफाई कर रहा है। तुम तो मेरे आमों को खराब कर रहे हो।''

तोते के पास आदमी के सवालों का जवाब नहीं था। इसलिए उसे आम के पेड़ से उड़ना पड़ा। तोता सोचने लगा, ''लोगो के लिए कौआ सफाई करता है। उनका नुकसान नहीं करता है। इसलिए लोग उसे पसन्द करते हैं और मैं तो उनके बाग के फल खराब करता हूँ। इसलिए मैं उनको अच्छा नहीं लगता।'' तभी कौआ वहाँ आया और बोला, ''मेरी तरह रहो, आओं अब जंगल में चलते हैं वहाँ हम दोनों को खाना मिल जायेगा।

सविता मीना, समूह–सावन, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

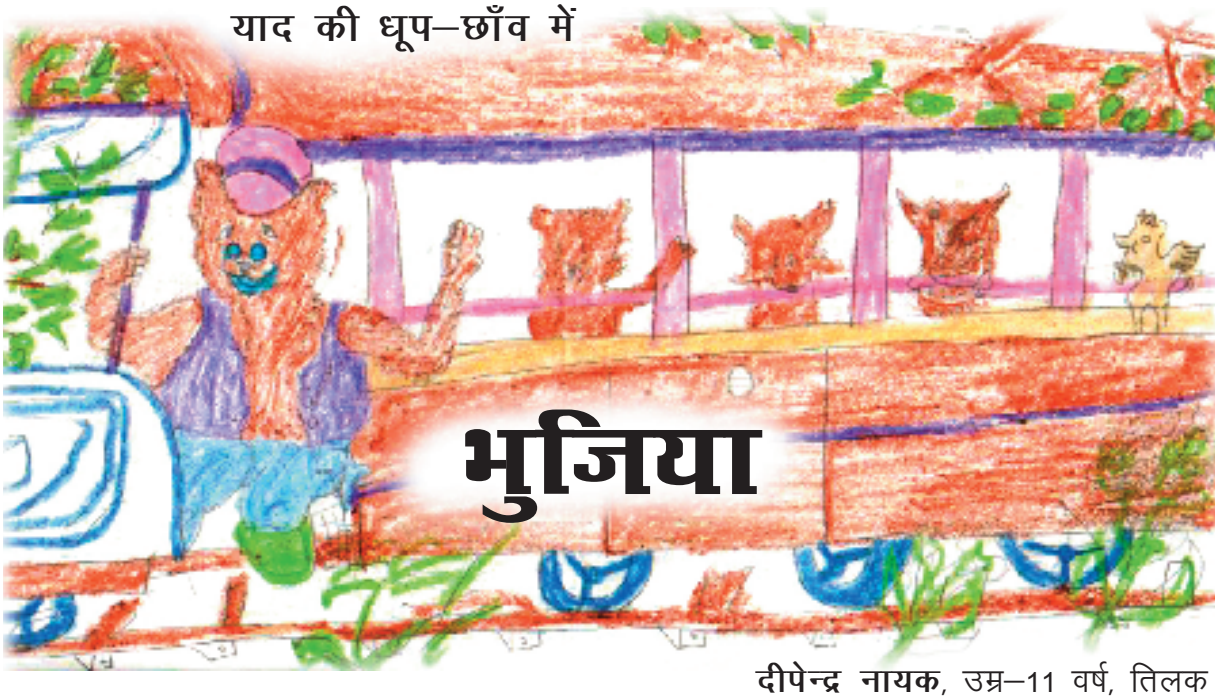

दीपेन्द्र नायक, उम्र–11 वर्ष, तिलक

हमारे यहाँ बीकानेरी भुजिया बेची जाती है। लोग उसे बहुत पसंद करते हैं। बीकानेरी भुजिया 5 व 10 रूपये की आती है। हमारे स्कूल के बच्चे लंच में बीकानेरी भुजिया लेने जाते हैं। मैं उसे ज्यादा पसंद नहीं करता हूँ। 5 दिन में एक बार लेता हूँ, परन्तु कुछ बच्चे रोज मम्मी–पापा से 5 या 10 रूपये नहीं देने पर रूठ जाते हैं। पापा–मम्मी को अपने बच्चों पर स्नेह आ जाता है। वे उन्हें रूपये दे देते हैं तो बच्चे बीकानेरी भुजिया खरीद लेते हैं। अब गाँव की दुकानों पर बीकानेरी भुजिया खत्म हो गई। हमारे गाँव के आदमी और बच्चे परेशान हैं। उन्हें मीठी गोलियाँ व बिस्कुट आदि खाने पड़ते हैं।

धर्मसिंह गुर्जर, कक्षा–4, उम्र–9 वर्ष, समूह–लहर

करंट

एक बार एक चिड़िया थी। वह मेरे घर के तार पर बैठी हुई थी। उस समय लाईट नहीं आ रही थी। अचानक लाईट आई तो चिड़िया के करंट आया और वह झट से नीचे गिर गई। फिर उसे मेरे भाई ने उठाया और खाने के लिए दाने डाले। चिड़िया दाने खाने लगी। वह रात को हमारे घर पर ही रही। सुबह देखा तो वह बेहोश जैसी हो गई। मेरे भाई ने उसे धूप में रख दिया जिससे उसके शरीर में गर्माहट आई। मेरा भाई उससे थोड़ी दूर गया तो वह चिड़िया झट से उड़ गई। फिर मेरे भाई ने कहा, ''देखो चिड़िया भी कितनी चालाक होती है।''

आरती मीना, समूह–खुशबू, उम्र–10 वर्ष

टक्कर

बात उन दिनों की है जब मैं कक्षा 2 में पढ़ती थी। मेरे दादा–दादी जो कि जयपुर में रहते थे मैं अक्सर उनसे मिलने शनिवार को जाती थी और सोमवार को वापस आ जाती थी। एक शनिवार की बात है कि मैं दादा–दादी से मिलने जयपुर गई और उनके घर पहुँची। घर पर जाने के पश्चात हमने थोड़ा विश्राम किया। उसके पश्चात शाम को मैं मेरी दादी के साथ बाजार में सब्जी खरीदने गई। सब्जी

ज्योति,
उम्र–8 वर्ष,
सितारे

खरीदने के लिए मेरी दादी के पास पैसे कम थे। इसलिए वह मेरे ताऊजी का इन्तजार करने लगी। मेरे ताऊजी जो कि टेम्पो चलाते थे। जैसे ही मैंने उनको टेम्पो लेकर आते हुए देखा तो मैंने आव देखा न ताव और तेजी से रोड़ की तरफ भागने लगी। एक मोटर साईकिल चालक ने मेरे टक्कर मार दी। इससे मेरे हाथ, पैर व पेट पर चोट आ गई। यह देखकर मोटर साईकिल चालक घबरा गया और तुरन्त मुझे अस्पताल ले जाकर पट्टी करवाई। मेरे परिवारजन (दादी) ने चालक को कोई दोष नहीं दिया क्योंकि गलती मेरी ही थी। आज भी जब वो घटना याद आती है तो मैं मेरी नादानी पर हस पड़ती हूँ।

आशा यादव, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनुपरा

चिड़िया व चुहिया

बहुत पुरानी बात है। एक जंगल में चिड़िया व चुहिया रहती थी। उनकी आपस में अच्छी जान–पहचान हो गई और अब वे पक्के मित्र बन गये थे। वे दोनों एक ही स्थान पर रहते थे। एक दिन चिड़िया ने अण्डे दिये जिनमें से कुछ दिनों बाद

गोविन्द गुर्जर,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–वीर शिवाजी

बच्चे भी निकल आये। कुछ दिनों बाद वे कुछ बड़े भी हुए। एक दिन दोनों ने (चिड़िया और चुहिया) बेर खाने की बात की। परन्तु बेरों की झाड़ियाँ बहुत दूर थी। रास्ते में कई कठिनाईयाँ भी थी। लेकिन वे कठिनाईयाँ चिड़िया के लिए नहीं बल्कि चुहिया के लिए ही थी। दोनों ने जाने का मन बना लिया। सोचा कि बेर अपने बच्चों को भी खिला देंगे। दोनों झाड़ियों से बेर खाने के लिए चल दी। चलते–चलते रास्ते में बहुत बड़ी नदी बह रही थी। चिड़िया ने तो अपने परों की सहायता से उड़ कर नदी पार कर ली परन्तु चुहिया नहीं कर सकी तो उसने मदद के लिए चिड़िया को आवाज मारी। बोली ''चिड़िया बहन, चिड़िया बहन मुझे नदी पार करना है।'' चिड़िया ने अपनी चोंच में चुहिया को पकड़ कर नदी पार करवा दी। दोनों फिर आगे चल

दिये। चिड़िया तो ऊपर उड़ती जा रही थी और चुहिया नीचे जमीन पर चल रही थी। एक भैंस ने चुहिया के ऊपर गोबर कर दिया जिससे चुहिया गोबर के नीचे दब गई। वह फिर चिड़िया को सहायता के लिए पुकारने लगी। ''चिड़िया बहन, चिड़िया बहन मुझे बचाओ, मैं गोबर के नीचे दब गई हूँ।'' चिड़िया ने फिर अपनी चोंच से गोबर हटाकर उसे बचाया। आगे चलते–चलते चुहिया एक ऊँट के पैर के नीचे आ गई। वह फिर बचाने के लिए चिल्लाई तो चिड़िया ने आकर उसकी मदद की। अब वे दोनों बेरों की झाड़ियों के पास पहुँच गई और बेर खाने लगी। बेर खाते–खाते चुहिया की नाक में बेर का कांटा चुभ गया तो वह जोर से चिल्लाई। फिर चिड़िया ने उसकी सहायता भी की। बाद में चुहिया दौड़ती रही किन्तु चिड़िया तो खाते ही जा रही था और चुहिया बेरों को इकट्ठा कर रही थी। जाते समय चिड़िया को याद आया कि मैंने तो बेर इकट्ठे किये ही नहीं, अब बच्चों के लिए क्या ले जाऊँ। उसने चुहिया से बेर मांगे लेकिन चुहिया ने मना कर दिया। चिड़िया ने कहा कि, ''मैंने तुम्हारी इतनी मदद की और तुम मेरे लिए इतना सा नहीं कर सकती। मैंने तुम्हें यहाँ आते समय नदी पार करवाई थी।'' चुहिया बोली, ''मैं तो डुबकी लगा रही थी।'' चिड़िया बोली, ''मैंने तो तुम्हें गोबर से भी बचाया था।'' चुहिया बोली, ''मैं तो हल्दी लगवा रही थी।'' चिड़िया बोली, ''मैंने तुम्हें ऊँट के पैरों के नीचे से भी बचाया था।'' चुहिया बोली, ''ओह, मैं तो कमर मसलवा रही थी।'' फिर चिड़िया बोली कि देख मैंने तुझे अभी कांटों से भी बचाया है। चुहिया बोली, ''मैं तो नाक फुड़वा रही थी।'' ये सब सुनकर चिड़िया निराश हो गई। और उन दोनों की दोस्ती टूट गई। वे दोनों वहाँ से वापस चल पड़ी।

हवलदार नायक, उम्र–15 वर्ष, राजकीय विद्यालय बंजारों की ढाणी

राधिका, उम्र–11 वर्ष, समूह–शीशम

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

कनिका साहू, उम्र–11 वर्ष, समूह–शीशम

1. हरी डंडी, लाल कमान, तोबा–तोबा करे इंसान।
2. कहलाती है रात की रानी, आँख से निकले हरदम पानी।
3. छोटे से हैं मटकूदास, कपड़ा पहने सौ पचास।
4. खड़ा द्वार पर ऐसा घोड़ा, जिसने चाहा कान मरोड़ा।
5. लाल गाय, लकड़ी खाये पानी पीये तो मर जाये।

हवलदार नायक, उम्र–15 वर्ष,
राजकीय विद्यालय बंजारों की ढाणी

हीहीही-ठीठीठी

1 शिक्षक– (विद्यार्थी से) भारत वर्ष के मानचित्र में कुतुबमीनार कहाँ है?
विद्यार्थी– पता नहीं सर।
शिक्षक– तो बैंच पर खड़े हो जाओ।
विद्यार्थी– (बैंच पर खड़ा होकर) सर! यहाँ से भी कुतुबमीनार नहीं दिख रही है।

2 एक छोटा बच्चा दूसरे बच्चे से – ''अगर दिन को सूर्य न निकला तो क्या होगा?''
दूसरा बच्चे ने जवाब दिया – ''बिजली का बिल बढ़ जायेगा।''

प्रीति जागा, उम्र–11 वर्ष,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय श्यामपुरा

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

बहुत सारे बच्चे कबड्डी खेल रहे थे। वहाँ एक बच्चा आया और कहने लगा कि दोस्तो मुझे भी अपने साथ खिलाओ। बच्चे बोले कि तेरा एक हाथ बहुत बड़ा है। पहले इसे छोटा करवाकर आओ तो लड़का वहाँ से चला जाता है...

बुद्धिप्रकाश गुर्जर, *समूह–सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

कहाँ गये वो ममता भरे दिन।
कैसे कोई जिये माँ तेरे बिन।
ओ माँ तुझे ढूंढू में कहाँ...

जियालाल नायक, *उम्र–10 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

पहेलियों के ज़वाब –

1. लाल मिर्च 2. मोमबत्ती 3. प्याज 4. ताला 5. आग

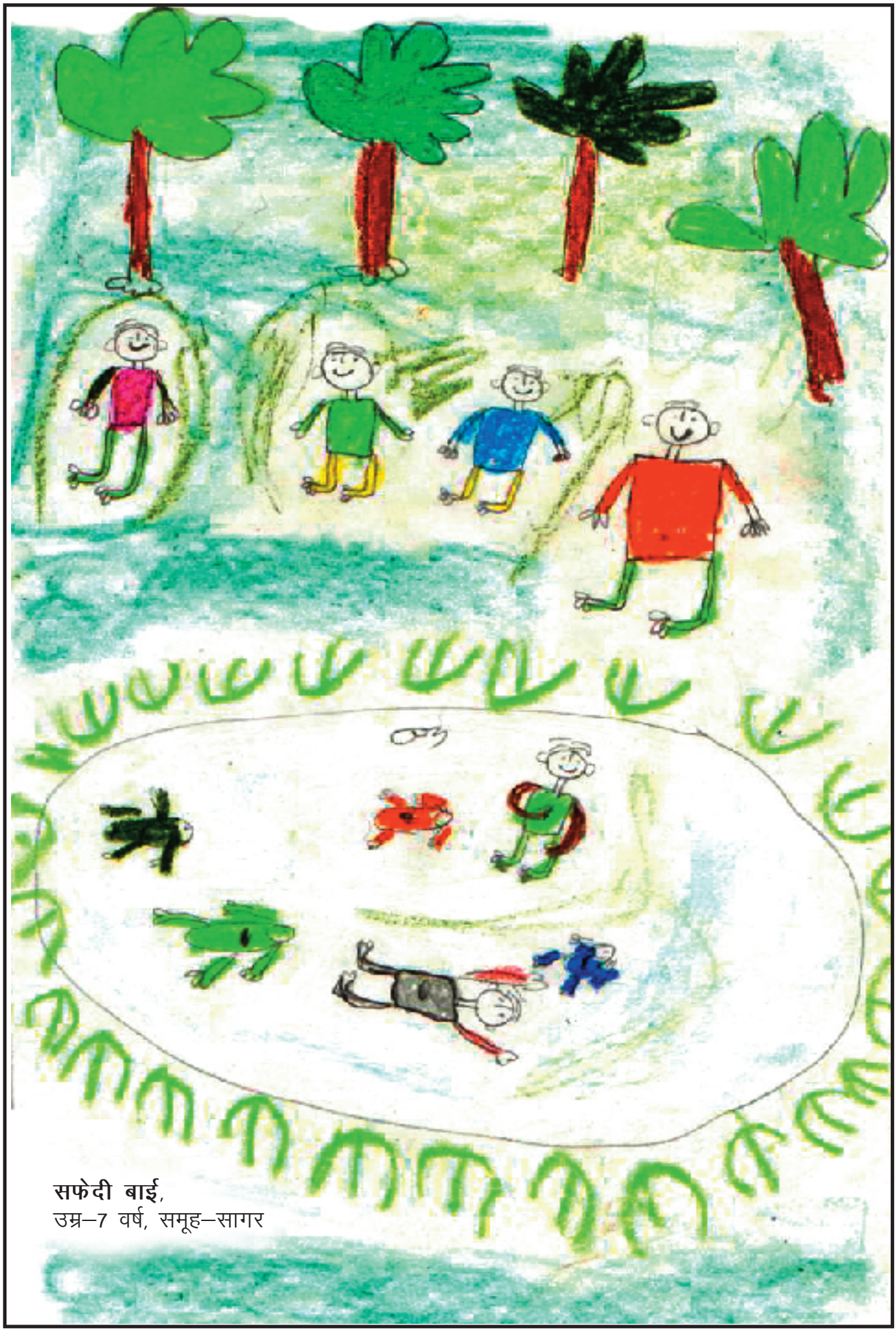

सफेदी बाई,
उम्र–7 वर्ष, समूह–सागर